मजदूर

भूखा ना सोये आज मेरा परिवार, शायद इसी आस में।
सुबह-सुबह एक व्यक्ति चल पड़ता है घर से, काम की तलाश में।।
कौन जाने कब, कैसे और कैसा मिलेगा काम ..... ?।
या करना पड़ेगा वैसे ही, उस पेड़ के नीचे आराम।।
फिर देखता है। एक आदमी लेकर आता है अपनी कार।
और कहता है। भाई चलोगे .... या यूं ही करोगे इंतजार।।
बात सुनकर उस आदम की वह व्यक्ति मंद-मंद मुसकराता है।
और फिर उसके साथ उसकी कार में बैठ जाता है।।
ले जाकर कहीं दूर ..... वह आदमी उसे काम समझाता है।
और काम के साथ-साथ उसे उसकी पगार बताता है।।
समझकर काम वह व्यक्ति अपना काम बड़ी ईमानदारी से करता है।
सुबह-शाम और दोपहर में वह व्यक्ति धूप में मरता है।।
काम हो जाता है पूरा और बात पगार की आती है।
तो व्यक्ति की दिनभर की थकान दूर हो जाती है।।
किसी दूसरे आदमी के हाथों वह अपनी पगार पाता है।
और देखता है क्या .... ??? मालिक अपनी कार लेकर कहीं और चला जाता है।।
अब बात उस व्यक्ति के घर पहुँचने की आती है।
फिर अचानक .... !!! उसे अपने बच्चों की भूख याद आती है।।
अब वह व्यक्ति अपने घर को पैदल ही जाता है।
और घर पहुँचते-पहुँचते थक कर चूर हो जाता है।
घर पहुँचकर बच्चों को बड़े प्यार से रोटी खिलाता है।
और फिर अपने पास बड़े आराम से सुलाता है।।
पैदल चलने की वजह से .... उस व्यक्ति के पैर में बड़ा दर्द हो रहा था।
और वह लेटे-लेटे, फिर से कल के बारे में सोच रहा था।।
हे भगवान ...! कल एक अच्छा सा काम दिला देना,
ना जाना पड़े आज की तरह दूर। उस रात यही दुआ करते - करते सो जाता है मजदूर।।

◆◆◆